मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख ● पूर्ण अंक २१६ अंक ● जुलाई-२०२५
Volume no. 18, Issue No. 216 July 2025

केसर स्नान

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-

अपने ह्यूस्टन (अमेरिका) मंदिर के २५ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते और सभा में सभी को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।

टोरेन्टो (आई.एस.एस.ओ. कैनेडा) के नूतन शिखरबद्ध मंदिर का शिलान्यास करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

एडमिन्टन (आई.एस.एस.ओ. कैनेडा) मंदिर के १० वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

वानकुंवर (कैनेडा में) कथा-वार्ता का लाभ लेते हरिभक्त ।

रजाईना (कैनेडा) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट दर्शन ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १८ ● अंक : २१६ ● जुलाई-२०२५

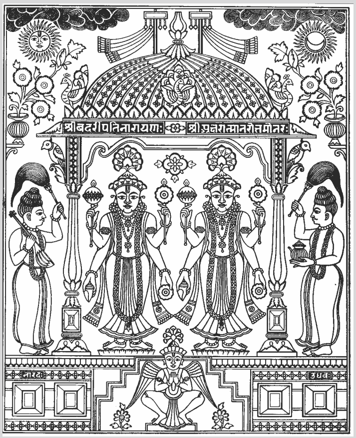

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, ०५
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

०३. ''समैयो'' के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री ०६

०४. श्रीहरि के ७ वें और ८ वें वंशज के मुख से अमृतवचन ०७

०५. अपने हरि मंदिर तथा प्रसादी के स्थान १२
(पोर बावोल देश) उवारसद

०६. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से १४

०७. भक्ति सुधा १५

०८. ''समैयो'' के उपलक्ष्य में १९

०९. सत्संग समाचार २२

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तो,

चातुर्मास का शुभारम्भ हो चुका है । कई हरिभक्त इस वर्षा के मौसम में ऐसा नियम बनाये होगे कि एक समय भोजन करेगे । ऐसा नियम रखने वाले पर महाराज अति प्रसन्न होते है ।

सच्चे सत्संगि की निष्ठा-श्रद्धा-उपासना-भक्ति स्वामिनारायण भगवान के प्रति होती है । यहीकर्ता हर्ता है । सुख-दुःख के दाता यही है ।

महाराजने जीवन जीने के लिये हम सभी को जडी बुटी के रुप में ''शिक्षापत्री'' दिये है । २१२ श्लोक की यह शिक्षापत्री का २०० वर्ष पूर्ण होने में अब अपने पास २१२ दिन शेष है । तब प्रतिदिन महाराज द्वारा दिये गये । नियमो को लेकर यह ''समैया'' उत्सव की राह देख रहे है ।

महाराजने भी कहा है कि ''व्रत के दिन वर्षो वर्ष से उत्सव मनाते है । उसमें ब्रह्मचारी, साधु, सत्संगी मिलकर करते है । कारण यह है कि जो कोई भी पापात्मा हो उसे यदि अंतकाल में स्मृति आ जाये तो वह भगवान के धाम को प्राप्त करता है।

हम सभी ''समैया'' के शेष दिनो में व्रत, तप, नियम करके सुखी होते है । ''समैया'' के अवसर पर गाँव तथा शहरो में अनेक प्रकार की प्रवृत्ति में सहयोगी बनने के लिये तत्पर रहते है । शिक्षापत्री के २०० वर्ष के द्विशताब्दी मनाने वाले भाग्यशाली है । उन्हे वह समैया अंतकाल में याद आयेगी । उसे कल्याण धाम अवश्य प्राप्त होगा ।

इस समैया में मान बढे । ऐसा भाव छोडकर सेवा प्रदान करे । तन, मन, धन से अपना समैया उत्सव है । ऐसा मानकर ''शिक्षापत्री'' अपना जीवन है । ऐसा अपनापन दिखाकर धन्यता अनुभव करना है ।

''समैया'' में लोभ, मान, ईर्ष्या, और क्रोध छोडकर भगवान के भक्त का सम्मान करना सिखना है । भगवान के स्वरुप में अखंड वृत्ति रहे । उसके उपाय के लिये । ऐसे समैया का चिंतन करते ओत-प्रोत होकर भाग ले अवश्य है ।

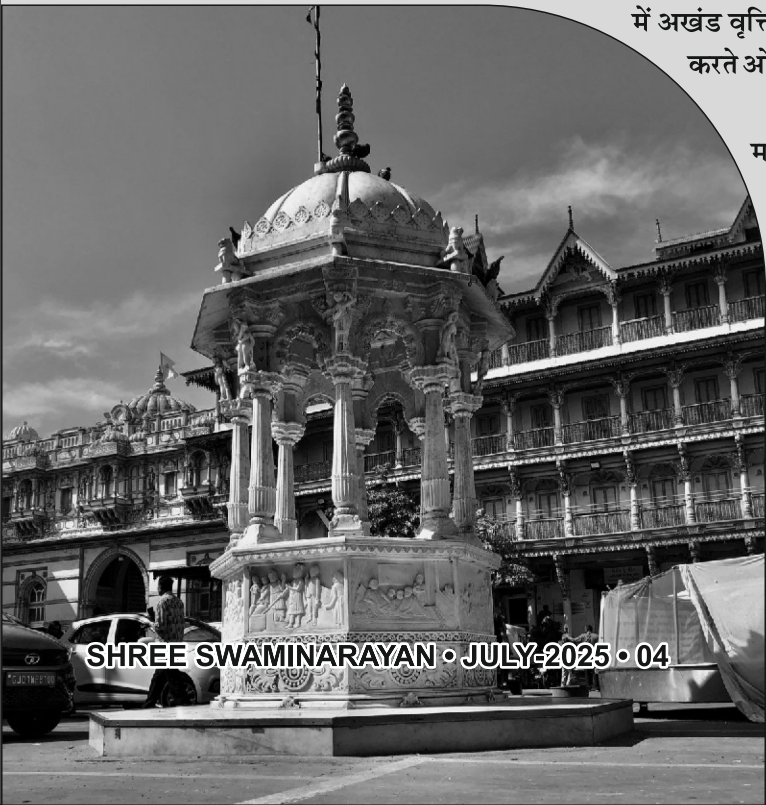

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा से कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा २१२ दिन तक अर्थात् 'समैया' के शुरु होने तक ''प्रसादम् के माध्यम से प्रतिदिन अहमदाबाद के छोटे-बड़े अस्पताल, रेल्वे स्टेशन आदि स्थलो पर भूखे लोगो को भोजन खिलाकर उनकी जठराग्नि शांत करने का महा भगीरथ सेवा यज्ञ संत-हरिभक्त कर रहे है । इसमें सेवा देने वालो को अधिक धन्यवाद है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०२५)

१ विसनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) भूमि पूजन पर पधारना।

५ प.भ. रमेशभाई जेठाभाई वरसाणी के यहाँ पधारना - थलतेज।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पाटोत्सव के अवसर पर पधारना, कच्छ लेउआ पटेल समाज भव्य नवजीवन अहमदाबाद में उद्घाटन में पधारना।

११ श्री नरनारायणदेव केशर स्नान स्वयं के करकमलो द्वारा पूर्ण किये। संत महादीक्षा भी अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर शिवगढ (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा पर पधारना।

२२ टोरेन्टो (केनेडा आई.एस.एस.ओ.) श्री स्वामिनारायण नूतन शिखरबद्ध मंदिर के शिलान्यास पर पधारना।

२०-२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर एडमिन्टन (केनेडा आई.एस.एस.ओ.) के दशाब्दी उत्सव पर पधारना।

२७-२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेक्सास (अमेरिका आई.एस.एस.ओ.) रजत जयंती पाटोत्सव पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०२५)

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर अेलन टाउन (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) के १० वें पाटोत्सव पर पधारना।

२७-२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेकसास (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) के रजत जयंती के अवसर पर पधारना।

श्री स्वामिनारायण

समैयो के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री

दृष्ट्वा शिवालयादीनि देवागाराणि वर्त्मनि ।
प्रणम्य तानि तद्देवदर्शन कार्यमादरात् ॥२३॥

अनुवाद : मार्ग में जाते (चलते) शिवालय या जो मंदिर आये । उसे देखकर उसे नमस्कार करे और आदरपूर्वक उस देवता का दर्शन करे ।

विवेचना : श्री स्वामिनारायण सम्प्रदायकी महानता दिखाते हुए श्लोको में से एक श्लोक कह सकते है । अन्य कई सम्प्रदायो तथा धर्मो में दूसरे देवी-देवताओ की अवहेलना सिखायी जाती है । जब कि अपने सम्प्रदाय में यहाँ श्रीजी महाराज अत्यंत स्पष्ट रुप से बताये है । किसी देव की अवहेलना नही करे तथा उन्हे उचित सम्मान दे । जब हम मार्ग पर चलते है शिव का मंदिर आये अथवा गणेश, सूर्यनारायण इत्यादि का मंदिर आये । तो वे सभी देव मंदिर ही है । इस लिये सम्मानपूर्वक प्रणाम करे । वहाँ पर जाकर दर्शन भी करें ।

सामान्य रुप से भारत में ऐसे पंथ प्रारम्भ हुए है । वह दूसरे देवताओ का अपमान करता सिखाते है । ऐसे लोकोक्ति मिली है । कि लोग कुछ सम्प्रदाय के लोग अन्य सम्प्रदाय का नाम भी नही लेने की सलाह देते है । ऐसे संकुचित सत्संगि शोभा नही देते है । किसी देवता की अवहेलना नही हो । श्रीजी महाराज इस प्रकार व्यापक सीख देते कहते है कि शिव आदि देवो को उचित सम्मान देना चाहिए । वशिष्ठ स्मृति में कहा गया है कि देवो को उचित सम्मान देना चाहिए । वशिष्ठ स्मृति में कहा गया है कि ।

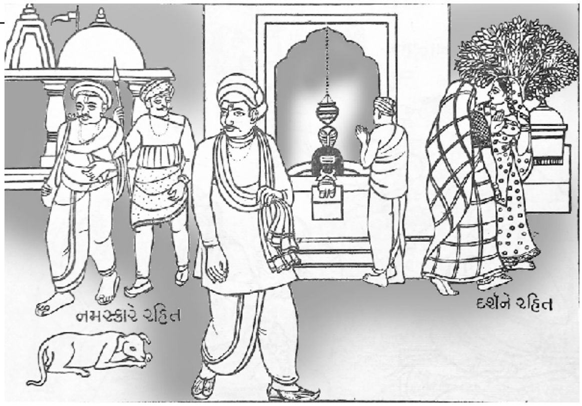

देवताप्रतिमां दृष्ट्वा यतिं दृष्ट्वा च योगिनम् ।
नमस्कारं न यः कुर्यात् प्रायश्चितीयते हि सः ॥

अर्थात् देवमूर्ति योगी इत्यादि को देखकर प्रणाम नही करने पर वह प्रायश्चित का भाग बनता है ।

आज जब संस्कार में अनेक प्रकार की संकुचित विचारधारा प्रतिदिन प्रचलित हो रही है । जब धर्म में राष्ट्र में या जीवन में छोटे-बडे अनेक घटनाये होने लगी है । तब श्रीहरि द्वारा बतायी गई बात सभी तक अवश्य पहुचाना चाहिए । कट्टर सम्प्रदायवाद, संकुचित भाव, अन्य धर्मो का विरोध करना अच्छी बात नही है । व्यापक बुद्धि रखकर, सहिष्णुता के साथ दूसरी की मान्यता तथा धर्म का तिरस्कार नही करना चाहिए । सभी को सबका आदर करना चाहिए । यहाँ पर श्रीजी महाराज अपने मुख से यह सिद्धान्त दिये है । सहिष्णुता एवम् व्यापक बुद्दि हो यह उचित बात है । हमे अन्य देवो तथा देवालयो को सम्मान देना चाहिए । इससे अपने सम्प्रदाय का गौरव बढ़ता है । तथा सनातन धर्म के उच्च सिद्धान्त की रक्षा भी होती है ।

श्रीहरि के ७ वें और ८ वें वंशज के मुख से अमृतवचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू. आचार्य महाराजश्री, पार्सीप के मंदिर (I.S.S.O.) के दसवे वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर ता. २४-०५-२०२५ : राम स्वामीने कहा आप सभी लोग स्नातक है। लेकिन मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं। मुझे पढ़ना अच्छा नही लगता था।

आप सभी को देखकर आनंद आया। बालपन से आप लोगो के मध्य रहकर बड़ा हुआ हूँ। ठाकोरभाई ! आप के पास हम लोग झूमते-झूमते आते थे। प्रहलादभाई के सोफे को तोड देते थे। पंकज चड्डी पहनकर धुमता था। अभी वह प्रेसिडेन्ट है। सोफा पर चढ़ने पर प्रहलादभाई नीचे उतार देते थे। आप सभी हरिभक्त आज बडी सम्पंती है। यह ममता का विषय है। सहज रुप से अपना पन आता है। विशेष करके ये मंदिर तथा सार्वजनिक स्थल पर आप के साथ बच्चे सहज रुप से जुड जाते है। इस में प्रेम और लगाव बढता है। इसे शब्दो में बताना गरीबीपन लगेगा। यह भगवान की कृपा है।

इस मंदिर का एक पट्टीका हमें अच्छी लगी है। राम स्वामी ! अभिषेक स्वामी फोटो लेकर मेरे पास आये। उसमें लिखा था । **Dont advice the administration, it not what is does** (प्रबन्ध में अनावश्यक सलाह नही दे) यह रसप्रद वस्तु है। मैं इन्स्टाग्रामबंद कर दिया हूँ। इसके लिये चालू करना पडेगा। कहने वाला हिम्मति होता है। प्रबन्ध करने वाला भी हिम्मतवाला होता है।

राम स्वामीने कहा,

अभिषेक स्वामी यहाँ पर आठ वर्ष से कार्यकर रहे है। मैने कहा कि पारसीप के दिग्गज लोग यहाँ पर है। यहाँ पर ५६ की छाती नही है। इससे बड़ी छाती होने पर रह सकते है। व्यवस्था करने वाले इतनी सलाह देते हो तो स्वामी को क्या छोडते होगे। चेरीहिल में स्वामी मिले तब बोले पारसीप मे थोडा ध्यान रखना। पहले कुछ विचार किये। इसके पश्यात ध्यान से सुने। धन्यवाद है स्वामी को, ये संत अधिक उत्साही और कर्तव्य निष्ठ है। वास्तव में ये सभी नवयुवक है। ये सभी बैठकर लड्डू नही खाते है। हमे तो इस देश में कंटाला आता है। यह देश कोई अच्छा नही है। आप भी जानते है। यह तो ठीक है कि भूल से आ गये है। वास्तव में यहाँ पर जो संत सेवा दे रहे है। वे सभी अभिनंदन के पात्र है। मनुष्य को सम्भालना, आप कल्पना करे। आप के घर मेहमान आने वाला हो कहे कि वीक एण्ड पर आये। **week ÏDay** में कार्य चालू रहता है। शेष ९१ और १९५ का पता ले ले उबेर करके जाये। अंक राम स्वामी जानते है। मुझे नही

ज्ञात है। आज अपने घर दो-चार मेहमान आने वाले हो तो क्या डिश रखे। क्या खायेगे। क्या नही खायेगे। क्या बात करे। इस सब का प्रबन्ध करते ५ दिन चला जाता है। तो यह पूरा मंदिर - सम्प्रदाय सम्भालना आसान नही है। संत एवम् आयोजन कर्ता को धन्यवाद। इस पत्त्रिका को लिखने वाले को भी धन्यवाद। प्रहलादभाई आप ही लिखे होगे। आप लिखने में प्रवीण है। यह मै विहोको मे से जानता हूँ।

लेकिन जो आनंद है। जीवन का सुख है। भगवान मिले है। मैं हमेशा कहता हूँ आनंद करे। ऐसे भगवान का सुख दुनिया में कहाँ मिलता है। गद्दा-तकिया तैयार नास्ता खाये। अब फिर भोजन जीवन मे जलसा है। शेष लोग किडनी निकाल लेते है। इतना बैठाने पर सब कुछ ले ही लेगे।

बडे बापजी ने १९७८ में I.S.S.O. की स्थापना किये। उसे २०२६ में ५० वर्ष पूरा होने वाला है। ५० वर्षो में ऐसे नियम का संरक्षण किये है कि बड़े का समैया के अलावा धन नही ले जाना है। ४८ वर्ष पहले यह सिद्धान्त बडे बापजीने दिया था। यह एक बड़ी बात है। बड़े बापजी दीर्धदृष्टा थे। शेष तो आप देख रहे हो जो लोग आते है। जेब खाली करते है कि नही बताइये। यह लाइये वह लाइये। जो देव का है उसमें अवश्य सेवा दे। शेष विषय में माथापच्ची नही करना चाहिए। पार्सीप मे जो है वे पारसीप के मंदिर में सेवा दे। कोलोनिया मे रहने वाले कोलोनिया में सेवा दे। अधिक हो जाये तो नरनारायणदेव को प्रदान करे। महाराज द्वारा प्रस्थापित मंदिरो मे दे तथा उसकी रसीद वहाँ से ले ले। सिद्धान्त इतना सा है। दूसरा व्यापार नही करना है। विशेषकर नरनारायणदेव हमे मिले है। संस्था मिली है। पारदर्शिता पर हम लोगो को गर्व है। ऐसी पारदर्शिता कही पर नही मिलती है।

लालजी महाराजश्रीने समैया की बात बोले है। इस जमाना में हमने आडिया दिया था। वातावरण का concept उनका है। इसमें आप सभी सेवा लिखवाये। कागज पर कई नाम है। दो पन्ने का है। दूसरे दो और कर दे। अपनी ईच्छानुसार सेवा लिखवाये। अधिक नही। देव का है और देव के लिये करना है। शिक्षापत्री है। आप सोचे सुखी किस कारण से हुए है।

ये पालयन्ति मनुजाः सच्छास्त्रप्रतिपादितान ।
सदाचारान् सद्दा तेऽष परत्र च महासुखाः ॥

ये महाराज के वचन है। महाराज कहे है कि मेरी वाणी मेरा स्वरुप है। जिस में भगवान की मूर्ति है। यह मूर्ति नही प्रत्यक्ष भगवान है। यह महाराज ने कहा है। हमारी वाणी मेरा रुप है। हम भगवान को माने तथा वाणी को नही तो यह भगवान की अमानना है। वह खराब बात है। यह शिक्षापत्री में स्पष्ट लिखा है।

आज आप और हम सुखी है यह सत्य है। अभी स्वामीने कहा कि हम क्या थे ? और क्या हो गये ? आप सभी लोग ४० मर्सीडीज लेकर आये है ? हम बोल रहे है कि मंदिर में पाँच-पाँच रुपये दे दे। गेस क्या करने वाले है ? महाराज कहे है कि हमारी आज्ञा का पालन करना है। यह समझने की बात है। ये पालयंन्ति मनुजाः जो मनुष्य पालन करता है। ये सच्छास्त्र है। जिसका मंथन करने से प्राप्त किया गया है। इस सच्छास्त्रो का प्रतिपादन किये। जो आज्ञा का पालन करेगा। वह महासुख प्राप्त करेगा। अभीष्ट फल उसे प्राप्त होगा। ये शब्द महाराजने लिखा है। अधिक Interesting वस्तु है। किसी दिन मंथन करने की बात है। अब तो सुख है। किसी के पास महासुख हो तो बताये। उदाहरण के रुप में प्रहलाद मेरे पास आये। हमने उन्हे मगस या मोहनथाल का टुकडा दिया। उन्हे सुख मिला। उनकी इच्छा तो दो लड्डू खाने की थी। अधिक खाने से

उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है । इसलिये संसार के सुख के पीछे दुःखी की छाया है । चौडे पहिये वाली गाडी यदि पंचर होगी तो उसे बनवाने का खर्च अधिक आयेगा । जितनी दुनियादारी बढेगी । उतना ही मायाजाल बढेगा । कुछ लोग कहते है मेरे पास २० स्टोर है । २० जगहो पर दौडते है । शांति से बैठ नही सकते है । एक स्टोर वाला शांति से शायंकाल घर जाकर आराम करता है । मायाजाल बढने से मेईनटेनेस भी बढ जाता है । नये वर्ष में विचार न होने पर कही कही पर जाना पडता है । यह मंदिर में स्वामी ने बताया है । यह मकान ठीक करवाना है । सभी वस्तुए मरमत माँगती है । लेकिन भगवान एक ऐसे है कि भगावन के वचन ऐसे है । भगवान के चरण की सेवा है । इसमें **Maintenance** नही चाहिए । इसे पकडकर हमे रहना है । भगवान के चरण सुखदायी है । भगवान के चरण के सिवाय अन्य जगह पर सुख नही है । महासुख अर्थात् जो सुख के पीछे दुख की छाया नही है । उस भगवान के चरणो में रहे । इस लिये हम सभी सुखी है । आज हँस सकते है । उसका कारण हम भगवान के आश्रय में बैठे है । भगवान की हम सभी के उपर अति कृपा है ।

लालजी महाराजश्री तथा संतोने शिक्षापत्री के बारे में कहे है । अपने लिये गर्व करने की बात है । यह उत्सव भु जमे मनाया जायेगा । वसंत पंचमी के दिन मूली में रंगोत्सव मनाया जायेगा । अहमदाबाद में पाँच दिन का आयोजन होगा । इस प्रकार यह अहमदाबाद देश का आयोजन है । अच्छा उत्सव होगा । इस उत्सव में दूसरा कुछ नही है । जो इच्छा हो वह करे । जिससे यह लगे अपना उत्सव है । ममत्व आये । घर तो काफी हो जायेगा । इसके लिये अमेरिका नही आना पडेगा । फोन पर मिल जायेगा । फोन नही भी करे तो भी प्रबन्ध हो जायेगा । भगवान सब कुछ करके देते है । अपने से नही होगा । कही खाली होने पर अधुरा हो जायेगा । हम इतने पीढ़ी से बैठे है । कोई विघ्न नही आती है । भगवान की ईच्छा से ही होता है । अपने करने से नही होता है । हम लोग तो दुःखी हो जाते है । १० या १२ वर्ष पर मंदिर होता है । परिश्रम करके मर जाते है लेकिन भगवान मिल जाये तो । हम जितना प्रयास करेगे उतना अपनापन आयेगा ।

प्रमोदभाई ! शुरु में हम लोग यहाँ आये । तब जमीन पर नजर गई । चारो तरफ पडा है । इस एकत्र कर लो । मंदिर नही बने तो बेचकर दूसरे चार बना लेगे । प्लानिंग ऐसा हो ना चाहिए । बाद में सभी ने कहा मंदिर बनना चाहिए । आज हरिभक्तो को मंदिर से सुख मिल रहा है । वस्तु वही है । लेकिन आज आनंद मिल रहा है ।

Biggest thing is ऐसा सुंदर मंदिर मिला है । अच्छे भगवान मिले है । अच्छा सत्संग मिला है । हमे उस सुरक्षित रखना है । **We have to cultivate that mind frame, so we can actually enjoy satsang** हमे सत्संग का आनंद लेना है । दबाव वाला सत्संग नही चाहिए । सिर पर चोट करे ऐसा सत्संग नही चाहिए । **Relax** होकर आनंद मिले ऐसा सत्संग चाहिए । इस लिये भगवान का प्रेम से भजन करे । कुछ जगह पर आज डरा देते है । कुछ लोग हैरान कर देते है । नरक दिखा देते है । डायरेक्टर लोग नर्क में अमुक जगह पर जायेगे । इनको पता है कि सिक्का कहाँ लगने वाला है । नर्क के कोन्सूलेट जनरल है । नरनारायणदेव के आसरा मे यह नही आता है । आराम तथा आनंद से भगवान का भजन करे । प्रेम से रहे । सुखी बने ।

आप को भी बच्चे-बच्चियाँ चाहिए । वे अपने बच्चे-बच्चियो को देखरेख परेशान होते होगे । इतना कहकर सभी को प्रेम भरा आशीर्वाद दिये ।

प.पू. लालजी महाराजश्री : १०-१० वर्ष से यहाँ के हरिभक्त आगे श्रेष्ठ लोग बैठे है। पीछे युवक बैठे है। आप सभी उत्साही है। नवी से लेकर मंदिर श्रम से बनवाये है। सत्संग बढाये है। अभी नेशवील मंदिर की प्रतिष्ठा हुई। तब सभा में अलग-अलग चैप्टर से प्रेसिडेन्ट और हरिभक्त आये थे । तब बात हुई पिछली ४० वर्ष से अमेरिका में २५ मंदिर बनाये गये । ये १० वर्षो के मध्य अधिक बने है। इससे पता चलता है। हमारे हरिभक्तो की एकता और श्रद्दा विदेश में रहकर भगवान के प्रति कितनी है। नये लोग जूडे और नये हरिभक्त बने । यह महत्वपूर्ण बता है।

पिछले वर्ष में आया था । पारसीप के सभी भक्त आपस में मिलकर सत्संग करते है । यह देखकर आनंद हुआ । अभी यह प्रेम अधिक हो । क्योकि १० वर्ष वह माईलस्टोन है। आप के क्षेत्र में सत्संग अधिक बढने वाला है। हम सबको मिलकर इसके लिये तैयारी करना है। किस तरह से अधिक लोग जुडे । लोग भगवानके साथ जुडे मात्र संख्या नही बढाना है। भगवान ने हम सभी को अपने मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय के जो सिद्धान्त दिये है। इसके लिये हमे अधिक कार्य एवं परिश्रम करना है। विशेष में अभी स्वामीने शिक्षापत्री की समैया का विज्ञापन किये है। शिक्षापत्री ही अपनी पहचान है। बाहर के लोग जो सत्संगी नही है । उन्हे अपने सम्प्रदाय की जानकारी देना हो तो सम्प्रदाय की प्रणालिका और् सिद्धान्त की पहचान मात्र शिक्षापत्री से दे सकते है। हम सभी भाग्यशाली है। कि अपने जीवन काल में हमे यह अवसर मिला है कि स्वामिनारायण भगवान के द्वारा स्वहस्त लिखित शिक्षापत्री आगामी वर्ष में २०० वर्ष पूरा करेगी। और समैया का लाभ हम सभी को मिलेगा। ता. २३ से २७ जनवरी २०२६ को है आप सभी जानते है। तब **When we are going to enjoy it, I invite every one to be a participate from all the elder to youngster people because it is our heritage and foundation of our Sampraday** (शिक्षापत्री हमारे सम्प्रदाय की नींव है और् वारसा है) इसका विस्मरण अर्थात् सब कुछ जाना है। शिक्षापत्री की जितनी महिमा कहे वह कम ही है।

एक के बाद एक उत्सव हो । अपने अहमदाबाद देश के प्रणाली के अनुसार अपने नरनारायणदेव का २०० वर्ष का पाटोत्सव ''पर्व'' मे आये थे । इससे भी विशे, शिक्षापत्री २०० का उत्सव मनाना है । उस समय **Covid** के नाते यात्रा विदेश के लोग नही कर पाये थे । इस लिये समैया की तारीख पहले धोषित कर दी गयी है। विदेश से अधिक लोग जूडे । इस वर्ष कई **Initiatives** प्रारम्भ किये है।

आप सभी जानते है । २०११ में स्वामिनारायण म्यूजियम का उद्घाटन किये तब महाराजश्री **Preservation Plus** नामक प्रोजेक्ट शुरु किये थे। जिससे अर्न्तगत पर्यावरण (**Enviornment**) को बचाने के लिये कई प्रोजेक्ट प्रारम्भ किये गये। हम सभी अलग-अलग क्रिया-कलाप किये थे । पूरा म्यूजियम सोलर पैनेल से चलता है । इसके लिये विन्ड मिल भी डाली गयी थी । इसके अर्न्तगत देश-विदेश में कई प्रोजेक्ट किये गये थे। पूरा म्यूजियम **Zero Carbon** इमिशन पर चलता है। यह **Preservation Plus** के इस प्रोजेक्ट को **Revise** करने के लिये काफी **Initiatives** शुरु किये है । इस बात को ध्यान मे रखकर पाँच दिन का समैया पूर्ण **EcoFriendly** (पर्यावरण को क्षति नही करे) होगा। कार्बन फुट प्रिन्ट के विना, गैस हीन, इस समैया में लाखो हरिभक्त इकठ्ठे

होगे। इनका **Waste Recycle** किया जायेगा। सिंगल प्लास्टिक का प्रयोग नही किया जायेगा। विद्युत सौर ऊर्जा से प्राप्त की जायेगी। यह सब क्रिया कलाप इस समैया पर किया जायेगा। सभी हरिभक्त अवश्य ध्यान दे। मै ऐसा नही मानता की आज तक कोई धार्मिक संस्था ऐसी की होगी।

महाराजश्री द्वारा की गयी यह प्रवृत्ति आगे ले जाने के लिये हम सभी को जिम्मेदारी लेना चाहिए। **Preservation Plus** को आगे ले जाने के लिये **Encourage** करना चाहिए। साथ ही साथ धार्मिक अन्य प्रवृत्ति सभा कथा वार्ता इत्यादि तो है की। **Social activity** अभी अच्ची बात कहे है। यहाँ के पुलिस अधिकारी युवको को बुलाकर **Fire Fiters** की क्रिया कलाप किये है। ऐसा कार्य अहमदाबाद और गाँवो में हम करने आये है। हमारे छोटे गाँव में पानी पहुँचे। बिजली मिले। यह प्रवृत्ति कालुपुर मंदिर द्वारा हमेशा से की जाती है।

यह समैया का एक **Overs view** है। आप लोग अच्छी सेवा दिये। और आगे देना भी है। प्रत्येक हरिभक्त से विशेष आग्रह है कि आप को भगवान ने जो शक्ति दी है। उसे समैया में अवश्य दे। महाराज २१२ श्लोक स्वयं लिखे है। और २०० वर्ष पूरा हो रहा है। हम सभी इसमें भाग ले। इतना कहकर सभी को आशीर्वाद दिये थे।

सभी संत-हरिभक्तो के लिये महत्वपूर्ण सूचना

(१) श्री नरनारायणदेव देश के समस्त संत-हरिभक्तो के लिये अति विशेष सूचना है कि अपने हरि मंदिर और शिखरबद्ध मंदिर में कभी भी किसी समय अज्ञात व्यक्ति युक्ति-प्रयुक्ति के द्वारा चोरी कर जाता है। ऐसी व्यवस्थापको की शिकायत है। जिस कारण से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की विशेष सूचना है कि कोई की अन्जाने व्यक्ति का विश्वास नही करे। दर्शन के बहाने से ऐसे लोग मंदिर दान पेटी, प्रसादी के सामान की चोरी करते है। इस लिये सावधान रहकर जब तक कोई मंदिर मे नहो तो ताला लगाकर रखे। अपरचित व्यक्ति को मंदिर में प्रवेश नही होने दे। कालुपुर मंदिर को सूचना दे। और उनका परिचय पूछे।

दूसरा विशेष हरिभक्त को भी देव की मर्यादा रखकर देव दर्शन, भजन भक्ति के अलावा अन्य चर्चा, वार्ता नही करना चाहिए। हो सके तो मंदिर के सी.सी. टीवी कैमरा सिस्टम लगवाये।

(२) अपने प्रत्येक मंदिर के शिखरबद्ध मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा बिना यदि कोई मंडल-अन्य प्राईवेट मंदिर व्यक्ति अपने स्वार्थ, लाभ के लिये व्यक्तिगत या सार्वनीक स्थिति में प्रवृत्ति करता हो तो उस मंदिर के महंतश्री, कोठारीश्री, अथवा व्यवस्थापक प्रवृत्ति नही करने दे। यह हम सभी का कतर्व्य है।

अपने हरि मंदिर तथा प्रसादी के स्थान (पोर बावोल देश) उवारसद

– बिपीन एम. पटेल (कालीगाम)

"वामे यश्य स्थिता राधा श्रीश्च यस्मास्ति वक्षसि,
वृंदावन विहारं तं श्री कृष्णं ह्रदि चिन्तये ।"

हम सभी की धर्ममय जीवन की मार्गदर्शिका अर्थात शिक्षापत्री, अपने शिक्षापत्री का प्रथम श्लोक श्रीहरि मंगलाचरण के रुप में कृपा करके दिये है। तो इस मंगलाचरण को हृदयस्थ करे।

(१) उवारसद : गांधीनगर से मात्र ७-८ किलोमीटर की दूरी पर अहमदाबाद से वाया अडालज होकर आये तो २२ से २४ कि.मी. की दूरी पर महाप्रसादीभूत 'उवारसद' गाँव आता है।

उवारसद गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदि लगभग १२६ वर्ष पुराना है। उवारसद गाँव के गाम गुरु अ.नि. स.गु. शा. स्वामी श्रीहरिनारायणदासजी गुरु अ.नि. स.गु. स्वामी गोपीवल्लभदासजी (मल्ल स्वामी) सत्संग पीयूष का पान कराके सत्संग के वटवृक्ष का विकास किये थे।

मंदिर में एक सुंदर पट्टिका लगी है। मोहनपुर, मही के किनारे रहने वाली बा कुँवरबा तथा कोठ गाँव की बाघेला श्री मूलूभा बापु की बच्ची। उन्होने संवत १९५७ के श्रावण सुद-१५ के दिन किये थे। इस मंदिर की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराजश्री ने संवत १९५५ के वर्ष में वेदोक्त विधि से किये थे।

इस गांव में श्रीजी महाराज का आगमन शास्त्रोक्त अनुसार देखे तो निष्कुलानंद स्वामीने शब्दो में है।

''अडालज में आये अलवेले रहे, रात त्यां छेल छबीलो, उवारसद गाँव को ओला गाँव को, गये हरि रथे, रजनी से गामे, छबी भक्त जेरामने लाल, जहो गविचल पुर जवाल, कणजी खजी, पूंजो भार, रहे उवारसद तजी उचार।

सदगुरु निष्कुलानंदजी श्रीजी महाराज के विचरण के साथ गाँव के भक्तो का नाम भी लिखे है।

मंदिर में प्रवेश करते ही सुंदर नक्क्शी वाला कार्य सिंहासन के मध्य में श्री स्वामिनारायण भगवान, श्री राधाकृष्णदेव, श्री नरनारायणदेव आदि का दर्शन होता है। मूर्ति मे मीनाकारी अच्छी लगती है। वहाँ पर महाराज विराजमान है।

महाराज के लीला चरित्र जैसे कि वनविचरण, झूला झुलते हरि, महाराज के चरणारविंद वाली मूर्ति का दर्शन मिलता है।

सद्. भूमानंद स्वामी के बात के आधार पर सं. १८६२ में महाराज ''महाशिवरात्री'' को समैया करके माणसा होकर उवारसद पधारे थे।

यह महाप्रसादीभूत उवारसद गाँव श्रीहरि के चरणो से कई बार पवित्र हुआ है। श्रीहरि के दर्शन से कृत्य-कृत्य हुए भक्त जेराम पटेल, जेठा पटेल, पुरजमाल पटेल, पुंजा पटेल, लालजी पटेल, अविचल पटेल तथा हरखजी पटेल ऐसे असंख्य भक्त महाराज के समय में हुए। जिससे यह गाँव अतिभाग्यशाली तथा महातीर्थ रुप मे है।

आज से १३ वर्ष पहले अपने प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदरि (बहनोका) देवो की प्राणप्रतिष्ठा विधिवत रुप से की गयी। इस गाँव में रहकर अपने आचार्य प.पू. बड़े महाराजश्री स्कूल में पढ़े है। यह स्कूल भी तीर्थस्वरुप मे ही है।

निज मंदिर का २५ वर्ष पूरा होने पर रजत जयंती महोत्सव प.पू. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से .गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) के मार्गदर्शन मे उल्लासपूर्वक मनाया गया था।

उवारसद गाँव श्री नरनारायणदेव युवक मंडल अधिक सक्रि यहै। प्रत्येक वर्ष के उत्सव उल्लास पूर्वक मनाये जाते है। श्री हनुमानजी का मारुती यज्ञ प्रति वर्ष मनाया जाता है।

इस प्रकार यह प्रसादीभूत उवारसद गाँव का दर्शन अवश्य ले।(क्रमशः)

हिंडोला उत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में

हीर के अद्‌भुत अलौकिक विविध प्रकार के कलात्मक हिंडोला दर्शन

दि. १२-०७-२०२५ से ११-०८-२०२५ तक

तिथि	तारीख	दिन	हिंडोला	तिथि	तारीख	दिन	हिंडोला
अषाढ वद-२	१२-७	शनिवार	फूल	श्रावण सुद-४	२८-७	सोमवार	चोकलेट
अषाढ वद-३	१३-७	रविवार	मीनाकारी	श्रावण सुद-५	२९-७	मंगलवार	अनाज
अषाढ वद-४	१४-७	सोमवार	कोडी	श्रावण सुद-६	३०-७	बुधवार	टीक्की-सितारा
अषाढ वद-५	१५-७	मंगलवार	झरी	श्रावण सुद-७	३१-७	गुरुवार	फूल
अषाढ वद-६	१६-७	बुधवार	पर्ल	श्रावण सुद-८	०१-८	शुक्रवार	शाकभाजी
अषाढ वद-७	१७-७	गुरुवार	भरतकाम	श्रावण सुद-८	०२-८	शनिवार	अलंकार
अषाढ वद-८	१८-७	शुक्रवार	रेशमकी दोरी	श्रावण सुद-९	०३-८	रविवार	सूकोमेवा
अषाढ वद-९	१९-७	शनिवार	डायमंड	श्रावण सुद-१०	०४-८	सोमवार	डायमंड पीस
अषाढ वद-१०	२०-७	रविवार	चोकलेट	श्रावण सुद-११ एकादशी	०५-८	मंगलवार	पवित्रा
अषाढ वद-११ एकादशी	२१-७	सोमवार	सुकामेवा	श्रावण सुद-१२	०६-८	बुधवार	कॉच
अषाढ वद-१२/१३	२२-७	मंगलवार	कोटनआर्ट	श्रावण सुद-१३	०७-८	गुरुवार	फूल
अषाढ वद-१४	२३-७	बुधवार	मोती	श्रावण सुद-१४	०८-८	शुक्रवार	वुडनआर्ट
अषाढ वद-३०	२४-७	गुरुवार	फ्रुट	श्रावण सुद-१५ पूनम-रक्षाबंधन	०९-८	शनिवार	राखडी -राखी
श्रावण सुद-१	२५-७	शुक्रवार	फूल	श्रावण वद-१	१०-८	रविवार	चोकलेट
श्रावण सुद-२	२६-७	शनिवार	नंग	श्रावण वद--२	११-८	सोमवार	शंख-कौडी
श्रावण सुद-३	२७-७	रविवार	डोलर				

नोंध : हिंडोला की सेवा कोठार कार्यालय में लिखी जाती है - संपर्क : ८२३८००१६६६

श्री
स्वामिनारायण
म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये
प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

अपना सम्प्रदाय साहित्य का धनी है । नंद संतो तथा अन्य आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा रचित कीर्तन आगे के कही प्रसिद्ध नही हुए । ऐसे अप्राप्य पद प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प से वर्तमान में प.भ. वालजी करसन (नैरोबी) के सहयोग से ''श्रीहरिगुणगान'' के टाईटल के अन्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा प्रसिद्ध किया गया है।

श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुओ मुख्यरुप से प.पू. आचार्य महाराजश्री की वंश परंपरागत अपने म्युझियममें दर्शन हेतु रखे है । परंतु अपने संप्रदाय के संतो के पास शिष्यपरंपरा में प्रसादी की वस्तुओ बहुत है । हाल में निर्जला एकादशी के दिन कालुपुर मंदिर के संत परमेश्वर स्वामीने अपने पास रहे ११ परंपारगत वस्तुओ म्युझियममें दर्शन के लीये रखने प.पू. बड़े महाराजश्री को अर्पण की है । होल नं. ६ में रंगमहोल विभाग में दर्शन के लिये रखी है ।

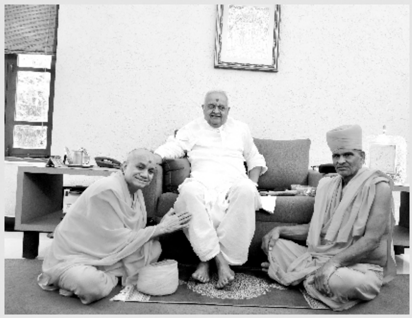

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-जून-२०२५

ता. १५-०६-२०२५ (सवारे) प.भ. धीरूभाई डाह्याभाई भावसार ८३ मी वर्षगांठ निमित्ते - ह. पंकजभाई धीरूभाई - भूयंगदेव अहमदाबाद.

ता. १५-०६-२०२५ (११ कलाके) प.भ. वैश्री हिमांशु महादेवभाई पटेल - अमेरिकाना विझा मळया ते निमित्ते - ह. प.भ. महादेवभाई पटेल - सोला

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची-जून-२०२५

रू।. १,००,०००/- पार्षद बाबु भगत गुरु पार्षद शंकर भगत - कालुपुर मंदिर.

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "श्रद्धा रखकर एकान्तिक भक्त बनने का प्रयत्न करना"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम सभी लोग यहाँ एकत्र हुए है । अपने भगवान के प्रति निष्ठा है । इस लिये एकत्र हुए है । अपने अपने आराध्यदेव के प्रति निष्ठा होनी चाहिए । आराध्य देव के शक्ति बिना कुछ सम्भव नही है । भगवान कैसे है । 'गोलोक', 'वैकुंठ', 'श्वेतद्वीप', 'ब्रह्ममहल' सभी धामो के अधिपति है । ऐसे अनंत कोटि के ब्रह्मांड के अधिपति जब पृथ्वी पर आते है । तो क्यो आते है ? अपने भक्तो के मनोरथ को पूर्ण करने के लिये आते है । हम सभी रास्ता भूल जाते है तो उसको ज्ञान कराने के लिये आते है । अपने बच्चे जब गाँव से बाहर जाते है तो । यदि समय से वापस नही आते है तो हम चिंतित हो जाते है । सोचे अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति भगवान इस पृथ्वी पर अवतार धारण करके आये होगे । तब उनके साथ जो सभी भक्त थे । उन्हे भगवान की पूजा-आरती का मौका मिला, सेवा का अवसर मिला वो कितने भाग्यशाली होगे । हम सोचे तो अनंतकोटि मुक्त, अष्टसिद्धि-नव विधि अखंड सेवा में रहे होगे । वे भगवान अपने तेज को छिपाकर जीव के कल्याण हेतु मानव शरीर धारण किये । इससे भक्त उनका दर्शन कर सके । सेवा अर्चना कर सके । ऐसा रुप धारण किये ते । वे भगवान की सेवा किये होगे । आरती का लाभ उठाये होगे । भगवान सूर्य चंद्र को प्रकाशित करते है । उस भगवान के लिये आरती का प्रकाश कैसा लगा होगा ! फिर भी भगवान अपना ऐश्वर्य छिपाकर प्रेमी भक्तो के पास से छोटी-बडी सेवा लिये । आज भी अर्चा द्वारा ग्रहण करते है । इस अर्चा स्वरुप में प्रत्यक्ष भगवान है । उनके प्रति अपनी अखंड चिंता तथा श्रद्धा रहनी चाहिए । जो ग.म. प्र. के चौथे वचनामृत में भगवानने कहा है कि ''अखंड चिंता होने पर श्रद्धा बनती है । श्रद्धा कम होने पर महात्म कम हो जाता है । जब महात्म में कमी आती है तो तब भगवान के स्वरुप में निश्चय कमी आती है ।'' श्रद्धा के द्वारा स्वरुप निश्चया और महात्म दृढ होता है । इस लिये श्रद्धा रखकर एकांतिक भक्त बनना चाहिए । जो एकांतिक भगत होता है । वह अपने वर्णाश्रम में ध्रमो के प्रति निष्ठा रखता है । आत्म निष्ठा में दृढता रखता है । भगवान के अलावा संसार की वस्तु में अरुचि हो जाती है । और भगवान की निष्काम सेवा करता है । ये चार लक्षण वाले एकांतिक भक्त होते है । हमेशा एकांतिक भक्त बनकर मूर्ति का चिंतन करना चाहिए । भगवान की मूर्ति मन में धारण करना चाहिए । मूर्ति हृदय में दिखने लगे ऐसा प्रयास करना चाहिए । ये अधिक कठिन है । अपने अंदर सतत संकल्प-विकल्प की धारा चलती रहती है । लेकिन चौबीस घंटे में एक घड़ी ऐसी आती है कि जब विचार की लहरे कम उठती है । उसी समय मन में ध्यान करना चाहिए । मै शरीर ने होकर आत्मा स्वरुप है । सुख-दुःख का असर शरीर पर होता है । मन को नही होता है । यह ज्ञान क्षणिक भी अधिक पुण्य देता है । यह संकल्प-विकल्प के बिना ध्यान होता है । यह शुद्ध होता है । इस शुद्ध ध्यान से आत्मा-अनात्मा का विवेक बढता है । यह होगा शेष दूसरा भी होगा । और महाराजने ग.प्र.प्र.वो ३३ वे वचनामृत में आशरा के बारे में कहे है । दृढ आसरा बडा साधन है । उसे करके भगवान को खुश रखे । वह सहारा अति दृढ चाहिए । जिसके बारे में भगवान के अलावा किसी का अवलम्बन नही हो तो उस आसरा के तीन भेद है । एक मूर्खता करके भगवान का सहारा लेते है । वह अधिक मूढ होता है । वह कई भी

नही जाता है । दूसरा भगवान के साथ प्रेम करके सहारा प्राप्त करता है । ईश्वर के प्रति दृढ प्रेम होता है । भगवान का उसे दृढ सहारा होता है । तीसरा बुद्धि के द्वारा होता है । जिसकी बुद्धि विशाल होती है । वह 'साकार-निराकार' तथा अन्वय और व्यक्तिपणा वह समझता है । परमात्मा जब अवतार रुप में रहते है । तब सगुण होते है । परमात्मा के प्रत्येक रोम में अनंत गुण होता है । इस लिये सगुण है । दिव्य मूर्तिमान वासुदेवरुप निर्गुण है । लेकिन निराकार न हो करके सगुण होते है । अर्थात् अक्षर ब्रह्म ईश्वर, जीव, माया तथा माया के कार्य करने के कारण भगवान को अन्तर्यामी भी कहा जाता है है । नियंता भी कहते है । यह भगवान का अन्वयपण भी है । वह सब से अलग अपने धाम के बारे में साकार और दिव्य मूर्ति भी है । यह भगवान का व्यक्तिरुप भी कहा जाता है । संसार के उत्पति के समय भगवान जिस प्रकार अक्षररुप में करते है । तथा पुरुष-प्रकृति के रुप में व्यवहार करते है । तथा जीव के कल्याण हेतु विराट पुण्य के रुप में व्यवहार करते है । ब्रह्मा-प्रजापति के रुप में व्यवहार करते है । जीव के कल्याण हेतु नारद- सनकादि के रुप में व्यवहार करते है । सब प्रकार से समझ लेते है । पुरुषोत्तम भगवान को सर्व से परे निर्विकार समझते हो । इस प्रकार जिसकी दृष्टि पडती है । वह बुद्धि द्वारा भगवान का दृढ सहारा रखते है । वह दूसरे के टालने से टलता नही है । स्वयं के हटाने से हटता नही है । भगवान मानव शरीर धारण करके समर्पण अथवा असमर्पता करते हो तो वह देखकर बुद्धि के बारे में भ्रांति होती है नही है । ऐसा हो तो दृढ सहारा कह सकते है । श्रद्धा, निष्ठा, एकान्तिक भक्त', अखंड चिंतन, दृढ आश्रय यह सब करने के लिये मन को मनाना पडता है । यह कार्य प्रतिदिन का है किसी भी वस्तु के लिये मन से झगडा करना ही पडता है । मन और माया का जीव ईश्वर की तरफ जाते है तो अच्छा नही लगता है । क्योकि मूर्ति हृदय में धारण करेगे, अखंड चिंतन करेगे, तब काम के ईच्छा मर जाती है । और किसी को मरना अच्छा नही लगता है । मन के डर से माया जीव को भगवान से दूर करती है । मन को सीधे मार्ग पर ले जाये । कलियुग चल रहा है । युग का प्रभाव मन एवम् शरीर पर पडता ही है । सबसे अधिक बुद्धि पर पडता है । कलियुग और माया के प्रभाव से मन खराब मार्ग पर चल देता है । इसके लिये कठोर प्रयास करना पडता है । कठोर बनना पडता है । अपने द्वारा प्रयास करना पडता है । कायर बन कर प्रयास करना छोडना नही चाहिए । भगवान के उपर दृढ श्रद्धा और प्रीति रखकर प्रयास करना चाहिए । भगवान के चरणो में ऐसी प्रार्थना करे कि हमे शक्ति दे तथा अपना मन सीधे रुप से कार्य करे ।

•

स्वभाव

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । यह स्वभाव युक्त प्राणी है । आत्मा के साथ जुडे स्वभाव अन्य-मृत्यु के कारण है । विषय संकल्प ही वासना कही जाती है । लेकिन भगवान को याद करके जो संकल्प लेते है वह स्वभाव कहलाता है । यह प्रकृति अपने स्वभाव, वासना, आदत, के नाम से जानते है । दुनिया के सभी पाठ्यक्रम सरल है । लेकिन स्वभाव सुधारने का कोर्स कठिन होता है ।

शायद संसार छोड देते है । स्वभाव नही छोडते है । स्वभाव एक ऐसा कारण है । कुत्ता राजा बन जाये तो भी कुत्ता काटना नही झोडता है । सभी गुणो को दबाकर स्वभाव सबसे पहले आ जाता है ।

जैसे गाँव में सोना, पैर में काँटा, आँख में तृण, किडनी में पत्थर पैर का दर्द होता है । मनुष्य को तब तक अच्छा नही लगता जब तक वह इन सभी कारको से दूर न हो जाये । सुख नही आये । जहाँ तक व्यक्ति में स्वभाव है तब तक दिव्य सुख का अनुभव नही कर सकता है । भोजन में रेत हो तो भोजन अच्छा नही लगता है । उसी

प्रकार स्वभाव भी भजन का सुख नही लेने देता है।

विना नियंत्रण के स्वभाव को वह खराब करता है। गरीब हो उसे शक्कर चाहिए। अच्छा-अच्छा भोजन चाहिए। यह भी दुखी होने का एक कारण है। कर्ज करके खाये। तथा पिये। उनके दुःख की सीमा नही रहती है। ग.म. ६८ के वचनामृत में श्रीजी महाराजने कहा है कि काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार ,मान-सम्मान यह सब नास्तिकता के लक्षण है। जो माया के एक भी स्वभाव का व्यवहार रखता है। उसे नारद सनकादी भी रोक नही सकते है।

हठी स्वभाव स्वयं को हानि करता है। इस प्रकार सीसे का पात्र टूटने पर लहु से लथपथकर देता है। इस प्रकार का स्वभाव सत्संग को हानि करता है। स्वभाव पर विजय विना। ज्ञान-भक्ति शोभा नही देती है। जिस प्रकार नीम अपना कडवापन नही छोडती है। मुर्गा हँस की नकल करे तो भी हंस का गुण उसमें नही आता है। नीच पुरुष परेशान करने वाले गुण को छोडता नही है। वह रावण की तरह निडर बनकर समाज को परेशान करता है।

कई बार चार रस्ते पर ट्राफिक जाम नही रहता है। लेकिन स्वभाव जाम होता है। सामने खडे होकर सडक पर बात करने से ट्राफिक जाम कर देते है। स्वभाव का तुफान व्यवहार का तहस-नहस कर देता है। इसी लिये कहा जाता है कि जर-जमीन और जोरु ये कजिया के ठोरे। कोर्ट-कचेहरी पुलिस थाना मे स्वभावो के संग्रह स्थल है।

वृद्धावस्था में बाल गिरते है लेकिन गुमान नही गिरता है? भाल का कौआ साबरमती पार करके गुजरात में नही जाता है। गुजरात का कौआ साबरमती पार करके भाल क्षेत्र में नही जाता है। यह देश स्वभाव का बंधन है। पशुपक्षी इस बंधन से मुक्त है।

घर छोडने वाला त्यागी होता है। मंदिर के कोठारी होने पर मंदिर बदलना कठिन लगता है। जितने मानव उतने स्वभाव दिखायी देते है। एक साधु को नरनारायणदेव देश की झोली माँगने के बदले श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश की झोली माँगने के स्थान पर वह देश बदल दिया। वह साधु त्यागाश्रम छोडकर गृहस्थ आश्रम में चला गया।

परमानंद स्वामी को भी ऐसा हुआ। जिस गौशाला में आसन रख दिया। साधु आश्रम में आये ही नही वह वही पर रह गये। एक नवदिक्षीत संत आये। उसे समावेश करने के लिये। गुणातीतानंद स्वामी धर्मशाला में रहते संतोने कहा आप अपने आसन को चार अंगुल आगे कर ले तो नया आया साधु बैठ सकता है। कुछ संत खिसक गये। एक संत खिसकने के लिये मना कर दिया। मैं थोडा भी नही हटूँगा। दूसरे साधु खिसक गये। उसे यह अच्छा नही लगा। वह जूनागढ से मूली गाँव आ गया। चार अंगुल नही जिसके तो ४० गाँव कैसे खिसक गया।

वडताल में एक पार्षद ने एक साँड को लाठी से मार दिया था। यह साँड पार्षद को जहाँ देखता दौडा लेता था। कुछ दिन बाद पार्षद की मृत्यु हो गयी। उसका अग्नि संस्कार भी कर दिया गया था। वह सांड समसान में जाकर पार्षद के पार्थिव शरीर के राख को माथा मार कर राख उडाने लगा। ऐसा विचित्र स्वभाव होता है।

एक मदारीय नदी पार करते समय सिर पर सर्प था। हाथ में बकरी लिये था। कंधे पर बंदर बैठा था। मदारी के मन आना कि तीनो को नदी पार करा दूँ। लेकिन जब कमर तक पानी आया बंदरने अपना स्वभाव दिखाया। सर्पने अपना फन निकाला। बंदर सर्प से बचने के लिये बंदर पानी मे कुद गया। बुद्धिहीन बकरा भी मदारी के प्रभाव मे नही रहा। वह भी पानी में कूद गया। इस प्रकार तीनो अपने स्वभाव के पानी मे डूब गये। भगवान जीव को भवसागर पार कारने के लिये तैयार है। जीव स्वयं अपने स्वभाव के कारण संसार में कूद पडता है। भगवान तो पहने लेने से स्वभाव टालकर मूल में आना कठिन है। कुत्ते की पूछ हमेशा टेढी की टेढी ही रहती है। प्रकृति बदलना कठिन है। मन को अपना करना अच्छा लगता है।

स्वभाव तो बदलना ही पडेगा । तो ही यह जीवात्मा अक्षरधाम में जा सकता है। वही अक्षरधाम में रुक सकता है।

•

गंगाजी

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल)

अब तो वर्णीराज अधिक खुशी में है । अपना उद्देश्य पूर्ण करने का समय मिला है । इस लिये अनहद आनंद है । वन की लताये, पशु-पक्षी भी इस प्रगट पुरुषोत्तम का दर्शन कहाँ से मिले । झुक-झुक कर नमन कर रहे है। पक्षी कलरव करके अपनी भाषा में श्रीहरि का गान कर रहे है। आनंद करते तथा आनंद देते श्री घनश्याम हरिद्वार में पहुँते है। जहाँ पर पवित्र गंगा अविरत बह रही है। गंगा के तट पर पवित्र कैलास पति का सुंदर मंदिर है। वहाँ पर शंकर भगवान ध्यानस्थ बैठे है। ध्यान में श्रीहरि की मूर्ति के सामने चलकर आते देखते है । ध्यान में से एकाएक उठकर वे वर्णीराज से सामने मिलने गये । तथा वर्णीराज का हाथ पकडकर मंदिर में ले गये । जहाँ पर गंगा अविरत बह रही थी। किनारे पर बैठकर भोजन कर रहे है। देवता लोग सेवा की ईच्छा रखकर देखते है। यह लाभ मनुष्य क्यो नही लेना चाहेगा। अनंत जन्म के पुण्य एकत्र होने पर पुरुषोत्तम नारायण की सेवा करने का अवसर मिलता है।

जहाँ पर हरि और हर का मिलन होता है। वह स्थल हर की पौडी कहा जाता है। किनारे (तटपर) गंगाजी का सुंदर मंदिर स्थित है। जिस में नयनरम्य श्री गंगा माता का स्वरुप विराजता है। श्री भगीरथ राजा के प्रार्थना से स्वर्ग में पृथ्वी पर आयी थी । इस लिये वहाँ पर भगीरथ राजा की मूर्ति भी विराजमान है। यहाँ सुबह-शाम गंगामां की आरती उतारी जाती है। जिसका दर्शन का लाभ लेने के लिये भक्तो का बड़ा समूह एकत्र होता है।

पतित पावनी गंगा में एकबार स्नान करे से कई जन्मो का पाप नाश हो जाता है । वर्णीराज के पधारने आनंद है। लेकिन मेरे आँगन में श्रीहरि भोजन मेरे हाथ से ग्रहण करे। इकी विशे, आनंद गंगाजी को है।

''धीरे चलो मेरी मा, गंगा मैया धीरो चलो, गंगा मैया धीरे चलो, मेरे तट पर श्री वर्णीराज, गंगा मैया धीरे चलो....''

सुरेन्द्रनगर के नये महंत स्वामी की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर के नये महंत स्वामी स.गु. स्वामी नित्यप्रकाशदासजी गुरु अखंडभजनानंदी स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी को नियुक्त किया गया है।

श्री नरनारायणदेव देश के आगामी उत्सव

अषाढ वद-२ ता. १२-७-२०२५ थी श्रावण वद-२ ता. ११-८-२०२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर हिंडोळाना दर्शन।

अषाढ वद-१० रविवार ता. २०-७-२०२५ प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीनो प्राकट्योत्सव।

अषाढ वद-११ सोमवार ता. २१-७-२०२५ कामिका एकादशी।

श्रावण सुद-८ ता. १-८-२०२५ दिल्ही मंदिर पाटोत्सव।

श्रावण सुद-११ मंगळवार ता. ५-८-२०२५ पवित्रा एकादशी।

श्रावण सुद-१५ शनिवार ता. ९-८-२०२५ मुकुटोत्सव पूनम, रक्षा बंधन।

श्रावण वद-५ ता. १३-८-२०२५ जयपुर (राज. जुनु मंदिर) पाटोत्सव।

श्रावण वद-८ शनिवार ता. १६-८-२०२५ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, मूली मंदिर समैयो।

श्रावण वद-११ मंगळवार ता. १९-८-२०२५ अजा एकादशी।

समैयो

के उपलक्ष्य में

"समैयो" के उपलक्ष्य में संतो द्वारा गाँव-गाँव में सत्संग-समाज लक्षीय क्रिया कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से अपने आगामी शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष को समैया के उपलक्ष्य में अपने निम्नलिखित गाँवो में संत-हरिभक्तो द्वारा की गयी प्रवृत्तियाँ का वर्णन ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप शिक्षापत्री सत्संग सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप में शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष के समैया के अवसर पर पू. स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ताद से सुंदर कथा का प्रबंध किया गया था । राणीप के सभी हरिभक्त कथा-वार्ता का लाभ उठाये थे । ता. ८-६-२०२५ के दिन अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे। प्रसंगोचित सभा में अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्‍ावमी स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजीने समैया की सूचना व्वस्थित समझाये थे । इस सभा में स.गु. महंत शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारणघाट), स.गु. जे.पी. स्वामी (कालुपुर), स.गु. कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी (कालुपुर) आदि संत पधारे थे । अन्त में प.पू. लालजी महाराजश्रीने पूरे सभा को आशीर्वाद दिये थे । अच्छे कार्यक्रम की व्यवस्था राणीप सत्संग समाज ने किया था ।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

नवावाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर शिक्षापत्री सत्संग सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज में १-६-२०२५ के दिन रविवार के दिन शिक्षापत्री की समैया के सत्संग सभा का सुंदर प्रबंध किया गया था । पू. महंत स्वामी के शिष्य कालुपुर मंदिर से पू. भंडारी स्वामी धर्मस्वरुपदासजी तथा स्वामी दिव्यस्वरुपदासजी आदि संत मंडलने अपने आगामी उत्सव समैया की सूचना प्रत्येक भक्त की प्रवृति यो को जुडने के लिये अनुरोध किया गया । हरिभक्तो उत्साहपूर्वह देखकर संत खुश हुए ।(स्वा. दिव्यस्वरुपदास)

सोलैया गाँव में शिक्षापत्री सत्संग सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर सोलैया में ता. १२-६-२०२५ को शिक्षापत्री सत्संग सभा का अच्छा प्रबन्ध किया गया था । प.भ. डॉ. जयेशभाई चौधरी, यहाँ के कोठारीश्री और श्री नरनारायणदेव युवक मडल द्वारा गाँव के सभी भक्तो ने आगामी होने वाले समैया के विषय में विविध क्रिया कलाप धार्मिक, सामाजिक मे जुडने की विनंती की गई थी । गाँव के सभी हरिभक्त उत्साहपूर्वक प्रवृत्ति किये थे ।(डॉ. जयेशभाई चौधरी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया शिक्षापत्री सत्संग सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया में ता. २२-६-२०२५ दिन सोमवार के दिन शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष वाली समैया के उपलक्ष्य में सत्संग सभा का आयोजन हुआ था । कालुपुर मंदिर से स्वामी श्रीजीस्वरुपदासजी और स्वामी दिव्यस्वरुपदासजीने हरिभक्तो ने भगवान को कथा-वार्ता तथा समैया के अवसर पर अनेक नियम और प्रवृत्ति करने का अनुरोध करके शिक्षापत्री, मंत्रलेखन नोट, पेन, कीचन, भेटरुप में देकर खुश किये थे ।(दिव्यस्वरुप स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच-बापुनगर और हर्षद कोलोनी में धार्मिक प्रवृत्तियाँ

''समैया'' के उपलक्ष्य में २० बड़े सत्संग सभा का संकल्प उसमें से पूर्व क्षेत्र में तीन सभा पूर्ण की गयी । जिस में धुन, सुंदर कांड का पाठ कालुपुर मदिर के पू. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा एर्पोच, पोरडा आदि मंदिर के महंत स्वामी द्वारा कथा वार्ता का लाभ सभी ने लिया था ।

श्रीहरि की अर्न्तध्यान तिथि के अवसर पर ज्येष्ठ सुद-१० के दिन बहनो द्वारा एप्रोच मंदिर (बहनो का) ५ घंटे तथा हर्षद मंदिर (बहनोका) में १२ घंटे की स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गयी ।

प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रेरणा से हर्षद मंदिर के बच्चो ने ता. ८-६-२५ रविवार के दिन जेतलपुरधाम यात्रा प्रवास किया गया था । जिस में बालमंडल के ३५ बालक बालिका भाग लिये थे । मंदिर में देव का दर्शन धुन करके पू. महंत स्वामी प्रसाद खिलाये थे । प.भ. गोरधनभाई जेतलपुर में आये प्राचीन तीर्थो के माहात्म्य को समझाये थे । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडाधाम

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद-आज्ञा से तथा स.गु. कोठारी स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा पूजारी स्वामी बालकृष्णदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण

मंदिर लालोडाधाम मे शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष का समैया तथा जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग के की कार्य हो रहे है। उस में प्रत्येक एकादशी के दिन ठाकुरजी को आम का अन्नकूट किया जाता है। इस में सभी सत्संगि हरिभक्त सेवा देकर जीवन धन्य कर रहे है। ता. २७-५-२०२५ के दिन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के क्रिकेट टीम मैच का प्रबन्ध किया गया था। इस में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभी सदस्यो ने हिस्सा लिया था। मैच के अंत में संतो द्वारा प्रोत्साहक पुरस्कार दिया गया था। प्रत्येक एकादशी को गाँव के सभी हरिभक्त सत्संग कथा-वार्ता का लाभ ले रहे है। (शा. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डुंगरी

श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर (टोरडा) के महंत शा. स्वामी सिध्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से ईडर, प्रदेश डुंगरी गाँव में ता. २४-५-२०२५ से ता. २७-५-२०२५ और भादरडी गाँव में ता. २८-५-२०२५ शिक्षापत्री के २०० वर्ष के अवसर पर सत्संग का अच्छा प्रबन्ध किया गया था। जिस में डुगंरी गाँव के पार्षद घनश्याम भगत ७ दिन तक शिक्षापत्री का महत्व बताये थे। डुंगरी गाँव के सत्संग समाज और ब्र.स्वा. अविनाशानंदजी द्वारा किया गया था। तथा भादरडी गाँव में एक दिन के लिये शिक्षापत्री कथा की गयी थी। अन्तिम दिन स.गु. महंत शास्त्री स्वामी सिध्धेश्वरदासजीने पधारकर प्रेरक वाणी से खुश किये थे। (पार्षद घनश्याम भगत - ईडरप्रदेश)

श्री स्वामिनारायण प्रसादम

शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष समैया के निमित्ते २१२ दिनो तक गरीबो को भोजन प्रसाद का प्रारम्भ।

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद एवम् अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रासदजी महाराजश्री के अध्यक्ष पद से आयोजित आने वाले शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष के समैया के उपलक्ष्य में एक वर्ष से धार्मिक-सामाजिक अनेक क्रिया कलाप तेजी से चल रहे है। परमपूज्य लालजी महाराजश्रीने एक बचन में सभी हरिभक्तो-संतो को रात-दिन देश-विदेश में लगातार प्रवृत्ति कर रहे है। आने वाली समैया की शुरुआत ता. २३-१-२०२६ और ता. २३-६-२०२५ का समय अर्थात् शिक्षापत्री के २१२ श्लोक के अनुसार २१२ दिन का समय रहा। इस २१२ दिन तक अहमदाबाद शहर की छोटी-बड़ी अस्पताल, अनाथाश्रम, आँगनवाडी, रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन, फूटपाथ जहाँ पर भी भूखे मनुष्य हो वहाँ पर अपने अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर की तरफसे तैयार भोजन के पैकेट का वितरण किया गया। अपने अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु.शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी संत-हरिभक्त को साथ में रखकर ऐसी मानवता की महक फैला रहे है। प्रथम १५ दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२ गाडी से भरी भोजन प्रसाद का वितरण शुभारम्भ किया गया था। इस प्रकार सभी क्षेत्र में मंदिर से यह प्रवृत्ति की जा रही है। सेवा भावी हरिभक्त ऐसी मानवतापूर्ण सेवा में स्वेच्छा से जुडकर कार्य कर रहे है। तथा परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा और धर्मवंशी के कृपापात्र बन रहे है।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से

एवम् प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षस्थपद से

शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष का "समैयो" दि. २३-१-२०२६ से २७-१-२०२६ तक

॥ प्रसादम् ॥

क्रम	मंदिर के नाम	महंतश्री तथा कोठारी के नाम	मोबाईल नं.	दिनांक	नोंध
१	गांधीनगर सेक्टर-२	स.गु.शा.स्वा. देवप्रकाशदासजी (महंतश्री उनावा) स.गु.शा.स्वा. भक्तिप्रकाशदासजी (कोठारी स्वामी गांधीनगर से-२)	९३२८७९३२८७ ८१४१२५६२००	२४-६-२५ से ७-७-२५	६-७-२५ एकादशी
२	नारणपुरा अहमदाबाद	स.गु.शा. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (महंतश्री नारणपुरा)	९०९९०९२२४५	८-७-२५ से २२-८-२५	२१-७-२५ - एकादशी
३	कोटेश्वर	स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)	९९२५०२३७७९	२३-७-२५ से ७-८-२५	५-८-२५ - एकादशी
४	नवा वाडज	श्री निलेशभाई	८१४१४४६०८४	८-८-२५ से २३-८-२५	१६-८-२५ -जन्माष्टमी १९-८-२५ - एकादशी
५	जीवराजपार्क	श्री भरतभाई ठक्कर	९९२५००७६६२	२४-८-२५ से ७-९-२५	३-९-२५ - एकादशी
६	आर.सी. टेकनिकल	श्री रमेशभाई	९५८६४२२६०१	८-९-२५ से २३-९-२५	१७-९-२५ - एकादशी (श्राध्दपक्ष)
७	कलोल	स.गु.शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (महंतश्री कलोल-जमीयतपुरा)	९७२५१११९९९	२४-९-२५ से ८-१०-२५	३-१०-२५ -एकादशी
८	बोपल	श्री आर. बी. पटेल	९७२५००७८७६	९-१०-२५ से २३-१०-२५	१७-१०-२५ - एकादशी
९	कर्मशक्ति	श्री अश्विनभाई दोंगा	६३२५११६८४०	२४-१०-२५ से ८-११-२५	२-११-२५ - एकादशी
१०	बापुनगर (एप्रोच)	स.गु.शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (महंतश्री एप्रोच)	८०००००४३९३	९-११-२५ से २३-११-२५	१५-११-२५-एकादशी
११	जमीयतपुरा	स.गु.शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (महंतश्री कलोल-जमीयतपुरा)	९७२५१११९९९ ८-१२-२५	२४-११-२५ से	१-१२-२५ - एकादशी
१२	हर्षद कोलोनी	श्री दासभाई	९९२५०४२६८६	९-१२-२५ से २३-१२-२५	१५-१२-२५ -एकादशी
१३	कांकरिया	स.गु.शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी (महंतश्री कांकरिया)	९३२७३७९८७२	२४-१२-२५ से ७-१-२६	३१-१२-२५ एकादशी
१४	नारायणघाट	स.गु.शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (महंतश्री नारायणघाट)	८४०१४५१५९७	८-१-२६ से २२-१-२६	१४-१-२६ - एकादशी

सत्संग समाचार

अहमदाबाद विमान दुर्घटना में मृत्यु प्राप्त मृतात्माओ की शांति के लिये अडमदाबाद मंदिर में (हवेली) कथा और सभा मंडप में ६ घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपगादीवालाश्री के संकल्प से अडमदाबाद में प्लेन दुर्घटना में मृत्यु पाये आत्मा की शांति के लिये श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर हवेली में ता. १७-६-२०२५ से ता. २३-६-२०२५ दोपहर के २ से ५ के मध्य प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की शुभ सानिध्य में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण सांख्ययोगी बहनो के वक्ता पद से की गयी। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री घडी के कांटे के समय से पधारकर कथामृत का पान करती थी । स्वभाव छे स्वामीनो परमदु:ख धार्यु धर्मवंशी का स्वभाव श्रीहरि के तरह दयालु था । किसी का दु:ख देख नही सकते थे । ऐसी प्रवृत्ति धर्मकुल के द्वारा की की जा सकती है।

और ता. २२-६-२५ एकादशी के दिन अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से विमान घटना मे मृत्यु प्राप्ती आत्मा शांति के लिये प्रात ८ से १२ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गयी थी। जिस का शुभारम्भ प.पू. बड़े महाराजश्री के करकमलो द्वारा हुआ था । पू. महंत स्वामी और सभी संत-हरिभक्त धुन में बैठकर धुन किये थे।

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर केशर स्नान दर्शन

विश्वका सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदरिक ालुपुर में विराजमान परमकृपालु श्री नरनारायणदेव तथा अन्य देव वैशाख सुद-३ अक्षय तृतीया से ज्येष्ठ सुद-१४ तक मलयागिर चंदन से वाघा प्रतिदिन ठाकुरजी का पूजारी ब्रह्मचारी संतो द्वारा किया जाता है। ज्येष्ठ सुद-१५ को ज्येष्ठ नक्षत्र के शुभ दिन प्रात: ६-३० से ७ तक परमकृपालु श्री नरनारायणदेव केशर स्नान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा विधिवत पूर्ण किया गया था । एक हरिभक्त परिवार यजमान पद का लाभ लिये थे । (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर ज्येष्ठ सुद-१५ सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. सगु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रत्येक पूनम को सत्संग सभा का सुंदर आयोजन होता है। इस ज्येष्ठ सुद-१५ को सत्संग सभा के यजमान श्री नरनारायणदेव को खुशी हेतु प.भ. एख हरिभक्त परिवार ने लाभ लिया था। आज के सत्संग सभा के वक्ता स.गु. शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (महंतश्री एप्रोच) ने सुंदर कथा सुनाये थे । (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क का २७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से कालुपुर मंदिर के पू. स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के साथ सत्संग समाज के आयोजन से पाटोत्सव के अवसर पर प.भ. श्री परषोतमभाई वाघजीभाई सावलिया परिवार यजमान पद से पू. स.गु.शा. स्वामी श्रीरामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) तथा स,.गु.सा. स्वामी श्री सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट महंतश्री) के वक्ता पद से संगीतमय शैली में ता. २८-४-२५ से ४-५-२५ तक दो सत्र मे श्रीमद् भागवत कथा सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया था। कालुपुर मंदिर के महंतश्री पू. पी.पी. स्वामी आदि विद्वान संत आशीर्वाद के साथ सत्संग का पोषण किये थे। इस दिन प.पू. महाराजश्री पधारकर कता की पूर्णाहुति कराके यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे । इसी प्रकार बहनो के विभाग में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पधारकर बहनो को दिव्य सुख दी। एप्रोच मंदिर के महंत स्वामीने सभा का संचालन किये थे ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

एलनटाउन I.S.S.O. श्री स्वामिनारायण मंदिर दशाब्दी पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अपने एलन टाउन (I.S.S.O.) मंदिर का दशाब्दी महोत्सव १८ जून से २२ जून २०२५ के मध्य प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में उल्लास पूर्वक मनाया गया था । इस अवसर पर स.गु.शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (जेतलपुरधाम) के वक्ता पद से विदुर नीति पारायण, पोथीयात्रा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट, तथा स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) द्वारा तैयार की गई। कालुपुर मंदिर से प्रकाशित "भगवान श्री स्वामिनारायण के अनन्य आश्रित स्त्री भक्त" पुस्तक का विमोचन किया गया थआ । पाटोत्सव के अवसर पर प.पू.अ.सौ. बड़े गादीवालाश्री और पू. बिन्दुराजा

बहनो को दर्शन देकर आशीर्वाद दिये थे । यहाँ के हजारो हरिभक्त देवदर्शन, धर्मकुल दर्शन, कथा श्रवण करके धन्य हुए । (अरविंदभाई पटेल - गामडीवाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महीज का ४८ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबंध से श्री स्वामिनारायण मंदिर महीज का ४८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. १४-६-२०२५ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर पू. महंत शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, पू. महंत शा. स्वा. हरिप्रकासदासजी (मकनसर), पू. महंत शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (बावला) आदि संत मंडल श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक, अन्नकूट आरती करके सभा में कथा-वार्ता धुन-भजन करके हरिभक्तो को खुश किये । पाटोत्सव के यजमान प.भ. महेशभाई कोठारीने लाभ लिये थे ।(साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

धरमपुर (खाखरिया) गाँव में जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में २०० घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबंध से अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षता में की गयी थी । जेतलपुरधाम में द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में धरमपुर (खाखरिया) गाँव में २०० घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की पूर्णाहुति के अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, शा. स्वा. हरिप्रकाशदासजी (मकनसर महंतश्री) आदि संत मंडल पधारकर कथा-वार्ता की गयी । पूर्णाहुति की आरती उतारी गयी ।(साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा महामंत्रधून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में आयोजित जेतलपुरधाम में आगामी द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में लुणावाडा कडियावाड श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ५-६-२०२५ के दिन १२ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की गयी । पूर्णाहुति के अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. महंत स्वामी स.गु. स्वा. कृष्णप्रकाशदासजी, ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (ट्रस्टीश्री), स.गु. महंत शा. स्वा. हरिप्रकाशदासजी (मकनसर महंतश्री) आदि संत मंडल पधारकर कथा-वार्ता की गयी । पूर्णाहुति की आरती उतारी उतारकर जेतलपुरधाम द्विशताबदी महोत्सव की रुपरेखा समझाये थे ।(साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

जेतलपुरधाम द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में खंडेरावपुरा गांव में २०० घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में आयोजित आगामी जेतलपुरधाम के द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में खाखरिया खंडेरावपुरा गाँव में २०० घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का प्रबंध किया गया था । जिसकी पूर्णाहुती ता. २-६-२०२५ के दिन जेतलपुरधाम से पू. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, ब्र.स्वा. हरिस्वरुपानंदजी, स.गु. महंत शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी (मकनसर), स.गु. महंत शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (बावला), आदि संत मंडल कथा-वार्ता करके धुनपूर्णाहुति की आरती उतारकर जेतलपुरधाम की द्विशताब्दी महोत्सव की जानकारी समझाये थे ।(साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

जेतलपुरधाम द्विशताब्दी के अवसर पर देवपुरा (खाखरीया) में २०० घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की अध्यक्षता में आयोजित आगामी जेतलपुरधाम में द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर देवपुरा (खाखरिया) गाँव में २०० घंटे की श्री स्वामिनारायण महामत्र धुन किया गया था । जिसकी पूर्णाहुति ता. ७-६-२०२५ के दिन जेतलपुरधाम से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, ब्र. स्वा. हरिस्वरुपानंदजी आदी संत मंडल पधारकर धुन की पूर्णाहुति आरती करके जेतलपुर महोत्सव की सूचना तथा रुपरेखा बताये थे । अगल-बगल के गाँव के हरिभक्त पधारे थे । (साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

कवि सम्राट स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के जन्म स्थान खाण (राज.) गाँव में जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में अखंड धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की अध्यक्षता में आयोजित जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्व के उपलक्ष्य में स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के जन्म स्थान खाण

गाँव में ता. ८-६-२०२५ के दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की गयी थी । इस अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, पू. महंत शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (बावला), पू. महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (नारणपुरा) आदि संत मंडल के साथ विरमगाम, कालीयाणा, ट्रेन्ट, जेतलपुर, नारणपुरा, सीतापुर, बायड आदि गाँव में ७०० जितने भक्त धून से जुडे है । यहाँ के महंत स.गु. शा. स्वामी कुंजविहारीदासजी सहयोग देकर सभी को खुश किये थे ।(साधु जनमंगलदास - जेतलपुर)

जरवला गाँव में जेतलपुरधाम द्विशताब्दी के अवसर पर २०० घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान से आयोजित झावि जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के उपक्ष्य में जरवलाँ गाँव के हरिभक्तो ने २०० घंटे की महामंत्र धून की गयी थी । ता. २०-६-२५ के दिन पूर्णाहुति प्रसंगे जेतलपुरधाम से शा. जनमंगल स्वामी, स्वामी अक्षरप्रियदासजी आदि संत मंडल पधारकर धुन की पूर्णाहुति करके जेतलपुर महोत्सव की रुपरेखा समझाये थे । (साधु जनमंगलदास - जेतलपुर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार
बालशिबिर चराडवा (हलवद)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के प्रेरणा से चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ३-६-२५ और ४-६-२५ तक बाल शिबिर का आयोजन चराडवा मंदिर के महंत स्वामी नीलकंठप्रसाददासजी और शास्त्री स्वामी धर्मवल्लभदासजी तथा महंत शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी के सहयोग से अच्छे से पूर्ण हुआ । जिस में १५० से अधिक बच्चो ने लाभ लिया । प्रत्येक बच्चे को सम्प्रदाय तथा परम्परा के विषय में बताया गया था । सभी को अच्छा प्रसाद खिलाया गया ।(प्रति. अनिल दूधरेजिया)

विदेश सत्संग समाचार
श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर केरीराले नार्थ केरोलिना (I.S.S.O. अमेरिका) को ८ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. विश्वविहारीदासजी के अच्छे मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर केरीराले नार्थ केरोलिना का ८वाँ पाटोत्सव ता. ३०-५-२०२५ से १-६-२५ तक विधीवत रुप से मनाया गया था । पाटोत्सव के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री के २०० वर्ष वाले समैया के अवसर पर शिक्षापत्री भाष्य 'त्रिदिवसीय पारायण महंत शास्त्री स्वामी विश्वविहारीदासजी के वक्तापद से पूर्ण हुई । पोथीयात्रा में उल्लास से हरिभक्त जुडे थे । ता. ३१-५-२०२५ शनिवार के दिन मारुति यज्ञ का प्रबंध किया गया था । ता. १-६-२०२५ रविवार को प्रातः ठाकुरजी की षोडशोपचार महाभिषेक शा. स्वा. विश्वविहारीदासजी, ब्रत स्वा. अनंतानंदजी, ब्र.स्वा. कृष्णप्रियानंदजी (सिन-सिनाटी) स्वा. भक्तिविहारीदासजी (आटलंटा), पार्षद नरेन्द्र भगत (जेक्शन विले) आदि पधारे थे । ठाकुरजी को नया वाघा पहनाकर लोगो को दर्शन कराया गया था । भव्य अन्नकूट तथा संत-पार्षदो के अमृतवाणी का हरिभक्त लाभ लिये । सभा का संचालन शा.स्वा. भक्तिविहारीदासजी ने किया था । यहाँ के मंदिर के दोनो संत महंत शा. स्वा. विश्वविहारीदासजी और ब्र.स्वा. अनंतानंदजी ने अच्छा प्रबंध किया था ।(जीज्ञेशभाई शेलत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O.) रजाईना का (केनेडा) ७ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा महंतश्री) के मार्गदर्शन से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर रजाइना (केनेडा) (I.S.S.O.) का ७वाँ पाटोत्सव १३ जून से १५ जीन के मध्य उल्लास पूर्वक मनाया गया । पाटोत्सव के उपलक्ष्य में अपने कथाकार पू. स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने त्रिदिवसीय श्रीभक्ति चिंतामणी ग्रंथ की सुंदर कथा सुनाये थे ।

इस अवसर पर स.गु.शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी (कोठारीश्री कालुपुर मंदिर) पार्षद महेन्द्र भगत आदि ठाकुरजी की अन्नकूट श्रृंगार आरती आदि सेवा में अच्छे से भाग लिये थे । यहाँ के हरिभक्त कथा श्रवण-देवदर्शन से भाव विभोर हुए । वक्ताश्री अपने आगामी समैया महामहोत्सव की रुपरेखा समझाये थे । संतो ने ७ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक और अन्नकूट की आरती उतारे थे । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी - कालुपुर मंदिर)

वेनकुंवर (केनेटा I.S.S.O.) सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने वेनकुंवर केनेडा में ता. १५-६-२०२५ के सुंदर सत्संग सभा श्रीनरनारायण सत्संग समाज द्वारा यहाँ के शिवमंदिर में हुए थे । जिस में स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से कथा का अमृत पान कराये थे । सभी भक्त खुश हुए । आगामी समैया की सूचना दी

गीय थी । इस सत्ग सभा में स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी (कोठारीश्री कालुपुर मंदिर) सभा का सुंदर संचालन किये थे । भाविक भक्त कथामृत पान करके खुश हुए । संतो ने आगामी समैया महामहोत्सव की रुपरेखा समझाये थे । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एडमिन्टन (केनेटा I.S.S.O.) पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा महंतश्री) के मार्गदर्शन से अपने अडमिन्टन (केनेडा I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १७-६-२५ से ता. २१-६-२५ तक स.गु. शास्त्री स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) और स.गु. शास्त्री स्वामी श्री यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा महंतश्री) के वक्ता पद से श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण का सुंदर कथामृतपान यहाँ के हरिभक्त ने किया । प.पू. महाराजश्रीने ता. २० और २१ दो दिन हरिभक्तो को दर्शन का लाभ दिये थे । ता. २१-६-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा एडमिन्टन मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का पाटोत्सव-अभिषेक विधिवत रुप से पूर्ण किया गया । हरिभक्त कथा श्रवण, धर्मकुल देव दर्शन करके धन्य हुए । प्रसंगोचित सभा में स.गु. शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रकासदासजी (कांकरिया मंदिर महंतश्री), स.गु. शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी (कोठारीश्री कालुपुर मंदिर) और पार्षद महेन्द्र भगत आदि संत मंडलने समैया के विषय में समझाये । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पूरी सभा को आशीर्वाद दिये थे । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी - कालुपुर मंदिर)

टोरेन्टो केनैया (I.S.S.O.) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का भूमि पूजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से कैनेडा में (I.S.S.O.) अपने टोरेन्टो मे प्रथम श्री स्वामनारायण मंदिर निर्माण हुआ । इसके बाद वहाँ का सत्संग लगातार बढता गया । अपने हरिभक्त वहाँ पर स्थायी होते गये । तत्पश्चात अपना मंदिर समयानुसार छोटा होते गया । अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री टोरेन्टो के हरिभक्त ने प्रार्थना किये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने कहा कि श्री नरनारायणदेव अपने लिये अच्छी जगह अवश्य देगे । हम लोगो को ५ एकड जमीन मिल गयी । प.पू. आचार्य महाराजश्री और पूरे धर्मकुल खुश हुआ । स.गु.शा. स्वामी अभिषेकप्रसादजी (कांकरिया महंतश्री) तीन दिन हरिभक्त कथा का लाभ लिये । ता. २२-६-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा संत-हरिभक्त विशाल संख्या में आकर नूतन मंदिर का भूमि पूजन पूर्ण किये थे । इस दिन सायं टोरन्टो मंदिर में ता. २२-६-२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में विशाल सभा का आयोजन किया गया था । जिस में अपने संत स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), स.गु. शा. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा महंतश्री) स.गु. कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी (कालुपुर मंदिर), पार्षद महेन्द्र भगत आदि संत मंडल हरिभक्त भगवान के प्रति निष्ठा रखकर आने वाली समैया महामहोत्सव की पूरी जानकारी दी थी । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद मे नया मंदिर शीघ्र बन जाये । सभी हरिभक्तो की मनोकामना श्री नरनारायणदेव पूर्ण करे । ऐसा आशीर्वाद दिये थे । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी - कालुपुर मंदिर)

ह्युस्टन (टेकसास) I.S.S.O. श्री स्वामिनारायण मंदिर रजत जयंती महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने ह्युस्टन (टेक्सास) I.S.S.O. श्री स्वामिनारायण मंदिर के रजत जयंती महोत्सव ता. २३ जून से २९ जून २०२५ तक धर्मकुल के सानिध्य में मनाया गया । पू. स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीरामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का ह्युस्टन के कथा प्रेमी हरिभक्तोने श्रवण किया । ता. २६ से २९ जून तक प.पू.ध.धु. आचार्यम हाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में कथा पारायण, प्रसिद्ध डाक्टरो द्वारा हेल्थ चेक अप, रक्तदान कैम्प, श्रीहरिकृष्ण महारजा की रजत तुला, ठाकुरजी का भव्य अन्नकूट, श्रीहरियज्ञ, पोथीयात्रा, अन्य सामाजिक प्रवृत्तियाँ कीग यी थी । यहाँ के हरिभक्त यजमान बनकर लाभ उठाये थे । किचन की सेवा प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ने प्रशंसा की थी । अपना आगामी ''समैया'' के मुख्य यजमान तथा अन्य लोग सेवा लिखवाये थे । यहाँ के पू. नीलकंठ स्वामी, पू. भक्ति स्वामी का प.पू. महाराजश्री सम्मान किये थे । ह्युस्टन के मेयर (लेडीन) बहनो की सभा में पधारकर शोभा बढाई थी । अपने I.S.S.O. के चैप्टर मे से पू. सं. और हरिभक्त पधारे थे । प्रेसिडेन्ट प.भ. गोविंदभाई पटेल और कमेटी के सभी सदस्य सेवा दिये थे ।

लगातार चार-चार दिन ह्युस्टन के महोत्सव में प.पू. महाराजश्री उपस्थित रहकर सभी हरिभक्तो के उपर खुश होकर आशीर्वाद दिये थे । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी - कालुपुर मंदिर)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

चैत्र सुद-१ प.भ.अ.नि. अनिलकुमार तलसीभाई पटेल (कुडासण), प.भ. हर्ष घनश्यामभाई पटेल (डांगरवा), प.भ. नटवरलाल देवजीभाई पंचासरा (अहमदाबाद), प.भ. वसंतभाई आर. पंड्या (अहमदाबाद), प.भ. रविभाई महेन्द्रभाई राणपरा (मोरबी), प.भ.अ.नि. जीवराजभाई नरसिंहभाई पीपलीया (छापरी-अमेरेली), प.भ.अ.नि. भगवतीबेन बेचरभाई पटेल (लालोडा), प.भ. घनश्यामभाई ठक्कर (अहमदाबाद) । **चैत्र सुद-२/३** प.भ. हरगोविंदभाई मफतलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. नीतिनभाई जयंतीलाल वालाणी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. मनजी कानजी पिंडोरीया (मांडवी-कच्छ) । **चैत्र सुद-४** प.भ. जगदीशभाई नारणदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. वालबाई हिरजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ) । **चैत्र सुद-५** आशिष अरविंदभाई रामाणी (सुरत), अ.नि. स.गु. स्वामी प्रभुचरणदासजी - ह. प.भ. मावजी करशन हिराणी (सुखपर-रोहा), प.भ. चिराग कनुभाई पटेल (वेजलपुर) । **चैत्र सुद-६** प.भ.अ.नि. धिरजलाल नाथालाल सोनी (अहमदाबाद), अ.नि. ब्र. स्वामी बालकृष्णानंदजी (वडताल) । **चैत्र सुद-७** प.भ.अ.नि. सुंदरबेन सांखला (वलसाड), प.भ. अमरतभाई बाबुभाई झुलासणा (सोजा) । **चैत्र सुद-८** प.भ.अ.नि. नानजी नारणभाई (भुज), प.भ. अमरीषभाई घनश्यामभाई पटेल (नारणपुरा) । **चैत्र सुद-९** प.भ. प्रद्युमनसिंह वनुभा वाघेला (गोधावी), प.भ. घनश्यामभाई वशरामभाई पटेल (धरमपुर), प.भ. विनोदभाई धनजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. प्रविणाबेन भावेशभाई (अहमदाबाद) । **चैत्र सुद-१०** प.भ. मनजी नाथा मेपाणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. महेशभाई भक्तिभाई पटेल (राजपुर), प.भ. महेन्द्रभाई हरिभाई (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. हरजीभाई देवजीभाई (अहमदाबाद), प.भ. रमेशभाई रणछोडभाई मादलीया (अहमदाबाद) । **चैत्र सुद-११** प.भ. क्रिष्ण शैलेषभाई पटेल (उनावा) । **चैत्र सुद-१२** प.भ. निकुंज रमेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अभिषेक काछडीया (अहमदाबाद), प.भ. धर्मेन्द्रसिंह दिगुभा चुडासमा (सुरेन्द्रनगर), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), प.भ. शैलेषभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. कनुभाई बाबरीया (अहमदाबाद), प.भ. सोनलबेन-रियान पटेल (डांगरवा) । **चैत्र सुद-१३** प.भ. जादवा रामजी खेताणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. हिराबा सोमदास (हवेली) (कालुपुर) । **चैत्र सुद-१४** प.भ. अशोक जादवा खेताणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. शांताबेन बापुभाई चौधरी (हिंमतपुरा), प.भ. हर्षिदाबेन आर. पंड्या (अहमदाबाद) । **चैत्र सुद-१५** प.भ.अ.नि. बाबुभाई मोहनभाई वावडीया (अहमदाबाद), प.भ. धनजी मावजी हिराणी (फोटडी-कच्छ), प.भ.अ.नि. अशोकभाई करशनभाई जादवा (मालणपुर), प.भ. हेमनी, वैदिही, अश्विन वरसाणी (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. आयुष भगत - संत महादीक्षा निमित्ते प.भ. सुरेशभाई शिवजीभाई राबडीया (मांडवी-कच्छ) ।

चैत्र वद-१ प.भ. जयश्रीबेन परेश राघवाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. फेनी प्रदिपभाई पटेल (गवाडा), प.भ. राजेन्द्रसिंह भीखाजी चावडा (बिलोदरा), प.भ.अ.नि. मगनभाई माधवजीभाई मकवाणा (अहमदाबाद), प.भ. नीरूबेन भाईलालभाई पटेल (अडालज), प.भ. कांतिभाई बी. पत्राडा (अहमदाबाद), प.भ. गणेशभाई मगनभाई बामरोली, प.भ.अ.नि. गोपाल रामजी हिराणी - ह. नारणभाई गोपालभाई हिराणी (गोडपर-कच्छ), प.भ. चंपाबेन केशवभाई (उगामेडी), प.भ. तन्वीबेन मनोजकुमार पटेल (डांगरवा) । **चैत्र वद-२** प.भ.अ.नि. हरजीभाई देवसीभाई वसाणी (अहमदाबाद), प.भ. पोपटभाई बलदेवभाई पटेल (कुंडाल) । **चैत्र वद-३** प.भ. रामजीभाई वेलजीभाई वाघजीयाणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. डाह्याभाई बाभईदास पटेल (गवाडा), प.भ. संगीताबेन केतनभाई पटेल (अहमदाबाद) । **चैत्र वद-४** प.भ. ज्योत्सनाबेन नैनेशकुमार पटेल (अहमदाबाद), श्रीजी महिला मंडल (मलाड-मुंबई), प.भ.अ.नि. भावनाबेन नरेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. धनजी मनजी वेकरीया (बलदीया-कच्छ) । **चैत्र वद-५** प.भ.अ.नि. दिनेशकुमार अमरतलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. डॉ. प्रकाशभाई सोमाभाई चौधरी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. केशुभाई भगुभाई पटेल (चांदखेडा), प.भ.अ.नि. कांतिभाई जादवजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कानजीभाई नारणभाई राघवाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. निलेशभाई पटेल (डांगरवा), प.भ. रावजीभाई चतुरभाई पटेल (चांदखेडा) । **चैत्र वद-७** प.भ. नीतिनभाई मनुभाई लींबासीया (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई पटेल (बोपल), प.भ. किरीटभाई कानजीभाई जादव (वेजलकावाला), प.भ. नीलाबेन धनश्यामभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पिनल तुषारभाई सुखडीया (निकोल), प.भ. मितलबेन पटेल (पलीयड) । **चैत्र वद-८** प.भ. हिमांशु भरतभाई गज्जर (अहमदाबाद), प.भ. जयकुमार पटेल (अहमदाबाद) । **चैत्र वद-९** प.भ. शिवजी नारण वेलाणी (सुखपर-कच्छ) । **चैत्र वद-१०** प.भ. बचीबाई प्रेमजी हालाई (सुखपर-कच्छ), प.भ. जादवजीभाई गाजपरीया (बलदीया-कच्छ), प.भ.अ.नि. सुरेशभाई सोमाभाई पटेल (मनीपुर) । **चैत्र वद-११** प.भ. शिवजीभाई करशन जेसाणी (बलदीया-कच्छ) । **चैत्र वद-१२** प.भ. देवजी हरजी हालाई (मेघपर-कच्छ), प.भ. भावेश जन्मेजयभाई दवे (अहमदाबाद), प.भ. नानबाई गोविंद पिंडोरिया (नारणपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. आशिषभाई भीखाभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ) । **चैत्र वद-१३/१४** प.भ.अ.नि. कमलाबेन बहेचरदास पटेल (सायरा), प.भ.अ.नि. कमलाबेन बहेचरदास पटेल (सायरा), प.भ. जीग्नेशभाई सुरेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. चंपाबेन चिमनलाल ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. हिराबा सोमदास (हवेली कालुपुर) । **चैत्र वद-३०** प.भ. नामान मनिष देवसी पिंडोरिया (नारणपर-कच्छ), प.भ. एक हरिभक्त (कोटेश्वर), प.भ. भारतीबेन लालभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. पारूलबेन जतीनकुमार जेठवा (अहमदाबाद), प.भ. शशीकांतभाई अमृतलाल मोडेशा (सुरेन्द्रनगर), प.भ. मितुल विक्रमभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. बाबुभाई नाथाभाई (अहमदाबाद), प.भ. उषाबेन त्रिवेदी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. भीखाभाई भलाभाई दलसाणीया (डुमाणा), प.भ. लक्ष्मीकांतभाई विश्रामभाई पटेल (माधापर-कच्छ), प.भ. कानजी कुरजी वरसाणी (भारासर-कच्छ) ।

अक्षरवास

श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली (राजस्थान) के स.गु. स्वामी पुरुषोत्तमचरणदासजी गुरु स्वामी रामलक्ष्मणदासजी ज्येष्ठ सुद-५ को ता. ३१-५-२०२५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

अहमदाबाद मंदिर में प्रति पूनम को नियमित सत्संग सभा में दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

अहमदाबाद मंदिर में अपने करकमलो द्वारा संत महादीक्षा देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

जीवराज पार्क मंदिर के ३७ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

अहमदाबाद विमान दुर्घटना में मृतप्राय जीवात्माओ के आत्मा के कल्याण हेतु कालुपुर मंदिर में अखंड धून की गयी ।

विसनगर नूतन मंदिर के शिलान्यास के मुहूर्त विधि करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

श्री कच्छ लेउवा पटेल समाज अहमदाबाद नवजीवन में नया संकुल का उद्घाटन करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

''समैया'' के उपलक्ष्य में राणीप में आयोजित सत्संग सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

''समैया'' के अवसर पर २१२ दिन तक अपने मंदिरो द्वारा गरीबो को मुक्त भोजन दिया जा रहा है उसका प्रारंभ करते पू. महंत स्वामी और संतगण ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

एन.एन.डी. क्रिकेट लीग फाईनल में प.पू. लालजी महाराजश्री की टीम ''टाइटन्'' उस समय कप के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री ।

शिवगढ (रापर) कच्छ नूतन मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा विधि करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

एलनटाउन (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी
महाराजश्री का २८ वाँ
प्राकट्योत्सव

अषाढ वद-१०
ता. २०-७-२०२५
रविवार

श्री स्वामिनारायण मंदिर,अमदावाद

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से
शिक्षापत्री लेखन २०० वर्ष का
समैयो
23-1-2026 - 27-1-2026
अध्यक्ष : प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
स्थल :-
''पर्व'' ग्राउन्ड, प्रभा हनुमानजी मंदिर के बागल में,
जमीयतपुरा, अहमदाबाद ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर,अमदावाद

विश्व का सर्व प्रथम
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में
समैया के अवसर पर
भव्य
प्रदर्शन
ता. १२-७-२५ से २३-८-२५